कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 13 अंक : 236 कानपुर, रविवार 27 फरवरी, 2022 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपये

राष्ट्रीय स्वरूप

aswaroop.in

नडाल ने एकापुल्को सेमीफाइनल में मेदवेदेव को हराया 10

करनाल बंट रोग से गेहूँ फसल को बचाये : डॉ. अजय

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने गेहूं फसल के प्रबंधन विषय पर कृषकों को एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि गेहूं की फसल में इस समय यानी बाली निकलने की अवस्था पर करनाल बंट रोग आ जाता है। इससे फसल की रक्षा करना आवश्यक है उन्होंने सलाह दी है कि 0.1त्न (1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) प्रॉपिकोनाजोल दवा के घोल का छिड़काव अवश्य कर दें। इसी दवा के छिड़काव को

पुन: 15 दिन बाद दोहराएं। जिससे इस रोग से फसल बच जाएगी। डॉ सिंह ने किसानों को सलाह देते हुए बताया कि गेहूं फसल में गांठ बनते समय (बुवाई के 65 से 70 दिन बाद) तथा बालियां आने के समय (बुवाई के 90 दिन बाद) दूधिया अवस्था में सिंचाई अवश्य करें। उन्होंने कहा कि बलुई भूमियों में सिंचाई की कम आवश्यकता होती है। जबकि मटियार भूमियों में सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है।डॉ सिंह ने कहा कि यदि किसान गेहूं फसल का सही ढंग से प्रबंधन करते हैं तो गेहूं फसल से अधिक लाभ प्राप्त होगा।

गेहूं फसल का करें उचित प्रबंधन : डॉ. अजय कुमार सिंह

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ.अजय कुमार सिंह ने गेहूं फसल के प्रबंधन विषय पर कृषकों को एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि गेहूं की फसल में इस समय यानी बाली निकलने की अवस्था पर करनाल बंट रोग आ जाता है। इससे फसल की रक्षा करना आवश्यक है उन्हें सलाह दी है कि 0.1% (1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) प्रोपिकोनाजोल दवा के घोल का छिड़काव अवश्य कर दें। इसी दवा के छिड़काव को पुनः 15 दिन बाद दोहराएं। जिससे इस रोग से फसल बच जाएगी।

डॉ. सिंह ने किसानों को सलाह देते हुए बताया कि गेहूं फसल में गांठ बनते समय (बुवाई के 65 से 70 दिन बाद) तथा बालियां आने के समय (बुवाई के 90 दिन बाद) दूधिया अवस्था में सिंचाई अवश्य करें। उन्होंने कहा कि बलुई भूमियों में सिंचाई की कम आवश्यकता होती है। जबकि मटियार भूमियों में सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है। डॉ. सिंह ने कहा कि यदि किसान गेहूं फसल का सही ढंग से प्रबंधन करते हैं तो गेहूं फसल से अधिक लाभ प्राप्त होगा।

Sign in to edit and save changes to this file.

गेहूं फसल का करें उचित प्रबंधन, बढ़ेगी पैदावार

❑ गेहूं की फसल में रोग दिखने पर दवा का छिड़काव जरूर

कानपुर, 26 फरवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने गेहूं फसल के प्रबंधन विषय पर कृषकों को एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि गेहूं की फसल में इस समय यानी बाली निकलने की अवस्था पर करनाल बंट रोग आ जाता है। इससे फसल की रक्षा करना आवश्यक है। उन्होंने सलाह दी है कि 0.1 प्रतिशत (1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) प्रॉपिकोनाजोल दवा के घोल का छिड़काव अवश्य कर दें। इसी दवा के छिड़काव को पुनः 15 दिन बाद दोहराएं। जिससे इस रोग से फसल बच जाएगी। डॉ सिंह ने किसानों को सलाह देते हुए बताया कि गेहूं फसल में गांठ बनते समय (बुवाई के 65 से 70 दिन बाद) तथा बालियां आने के समय (बुवाई के 90 दिन बाद) दूधिया अवस्था में सिंचाई अवश्य करें। उन्होंने कहा कि बलुई भूमियों में सिंचाई की कम आवश्यकता होती है, जबकि मटियार भूमियों में सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है। डॉ सिंह ने कहा कि यदि किसान गेहूं फसल का सही ढंग से प्रबंधन करते हैं तो गेहूं फसल से अधिक लाभ प्राप्त होगा।

वर्ष 16 अंक 57 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, रविवार 27 फरवरी 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक

नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com पेज -8

धर्मेंद्र ने कहा- लता जी हमेशा मुझसे बस एक फोन कॉल की दू

गेहूं फसल का करें उचित प्रबंधन : डॉ. अजय कुमार सिंह

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने गेहूं फसल के प्रबंधन विषय पर कृषकों को एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि गेहूं की फसल में इस समय यानी बाली निकलने की अवस्था पर करनाल बंट रोग आ जाता है। इससे फसल की रक्षा करना आवश्यक है उन्होंने सलाह दी है कि 0.1 प्रतिशत (1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) प्रॉपिकोनाजोल दवा के घोल का छिड़काव अवश्य कर दें। इसी दवा के छिड़काव को पुनः 15 दिन बाद दोहराएं। जिससे इस रोग से फसल बच जाएगी। डॉ सिंह ने किसानों को सलाह देते हुए बताया कि गेहूं फसल में गांठ बनते समय (बुवाई के 65 से 70 दिन बाद) तथा बालियां आने के समय (बुवाई के 90 दिन बाद) दूधिया अवस्था में सिंचाई अवश्य करें। उन्होंने कहा कि बलुई भूमियों में सिंचाई की कम आवश्यकता होती है। जबकि मटियार भूमियों में सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है।डॉ सिंह ने कहा कि यदि किसान गेहूं फसल का सही ढंग से प्रबंधन करते हैं तो गेहूं फसल से अधिक लाभ प्राप्त होगा।